ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

वर्ष-50 ● अंक 1
अप्रैल-जून 2017

केंद्र में विश्वनाथ त्रिपाठी

RAZA

स्मृति आख्यान

विस्मृति के समक्ष स्मृति का सत्याग्रहः नंगातलाई का गाँव

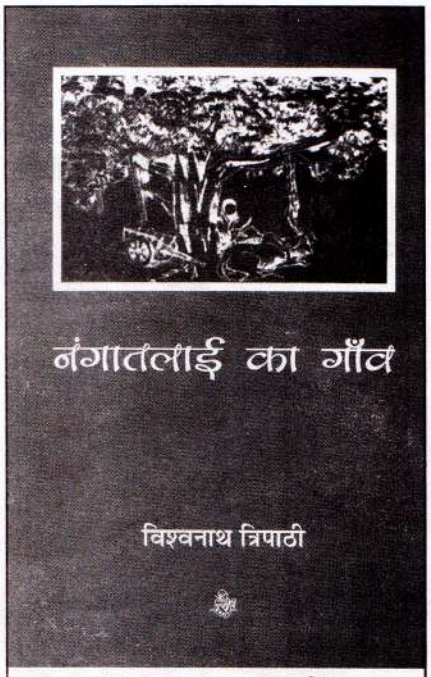

प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
अंसारी मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002,
प्र. सं. 2014, पृ. सं. 144, ₹ 350

आशुतोष

व्यक्तियों, शहरों और घटनाओं की तरह किताबों के भी मशहूर होने के कई सारे संयोग होते हैं। यह संयोग बनता है सही समय पर चीजों के आने से। सही समय पर आना, बहुत बार तो सायास होता है, किंतु कभी-कभी कुछ घटनाएँ स्वतः स्फूर्त ढंग से ही अपने आने का सही समय चुन कर मशहूर हो जाती हैं। इसका एक प्रबल उदाहरण है प्रख्यात आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी की किताब 'नंगातलाई का गाँव'। इसे विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'स्मृति आख्यान' कहा है। जिसमें नंगातलाई के पच्छू टोले के गाँव बिस्कोहर का किस्सा दर्ज है। बिस्कोहर जो लेखक का गाँव है। जिसके भूगोल की खबर देते हुए लेखक ने बताया है कि "पूर्वी उत्तर प्रदेश बस्ती जिले (अब सिद्धार्थ नगर) में गाँव है-बिस्कोहर। यह हिमालय की तलहटी में बसा हुआ है। तराई का क्षेत्र है अगर आप विसनाथ के घर के सामने खड़े हो जाएँ तो आपको बहुत दूर तक हिमालय की चोटियाँ दिखलाई पड़ेंगी। बरसात के बाद शरद आता है तो वे चोटियाँ, गहरे नीले रंग की लंबी माला-सी दिखलाई पड़ती हैं। गरमी में, वे पहाड़ की चोटियाँ कभी-कभी बहुत भयंकर दृश्य उपस्थित करती हैं।" (पृ. 11)

'नंगातलाई का गाँव' बिस्कोहर का स्मृति आख्यान है। किंतु अपनी व्याप्ति में यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँव मात्र का स्मृति-लेख बन गया है। बिस्कोहर के नाम के बारे में अपने गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को याद करते हुए लिखा है कि "एक बार जब पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी ने बिस्कोहर का नाम सुना तो उन्होंने कहा कि 'बिस्कोहर'? फिर मन में कुछ मुनमुनाकर बोले- 'विषकूपधर' यानी बिस्कोहर गाँव में बीस कुएँ रहे होंगे। प्राचीनकाल में गाँवों के नाम इस बात पर भी रखे जाते थे कि उनमें कुएँ कितने हैं। बिसनाथ ने कहा कि 'पंडित जी हमारे गाँव की बगल में एक गाँव है- सिकटोहर'। उन्होंने कहा कि 'वह शतकूपधर- वहाँ सौ कुएँ रहे होंगे। बिसनाथ ने फिर कहा कि 'पंडितजी एक गाँव है डेंगहर'। तो वे हंसने लगे और कहा कि 'ये मैं नहीं बता पाऊँगा।" (पृ. 13) यह प्रसंग मजेदार है। लोक अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया में तद्भवता का अपना एक निजी आख्यान रचता है। लोक की चीजों को हर बार शास्त्र के मारिफत 'डिकोड' नहीं कर सकते। वैसे भी शास्त्र से चलकर लोक तक नहीं पहुँच सकते, पर यदि लोक से चला जाय जो शास्त्र तक पहुँचा जा सकता है। कहना न होगा कि इसी तद्भवता ने विश्वनाथ त्रिपाठी

हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.) 470003
09479398591